23-8-68

हर 5000 वर्ष बाद बेहद का सुख मिलता है। मनुष्य तो कह देते अजनकलियुग की आयु इतने लाखों वर्ष की है। बहस तो करते हैं ना। यह ड्रामा। समझाना है। न समझे तो छोड़ देना है। आपे ही समझेंगे। बाप का परिचय देने से एक्युरेट समझ जावेंगे। बाप का स्वर्ग का वरसा था। भारत स्वर्ग था। स्वर्ग में देवी देवतायें थे। अभी नहीं हैं। फिर स्थापन हो रही है। हिस्ट्री जागराफी फिर से रिपीट होती है। यह झाड़ और गोला है। युरोपियन लोग भी इन से समझेंगे। हम पैराडाईज़ में आ न सकेंगे। पैराडाईज था। योगबल से स्थापन हुआ था। कैसे सो हम जानने चाहते हैं। सो तो तुम ही समझा सकते हो। भारत का प्राचीन राजयोग जिससे भारत पैराडाईज बना वह यहां ही सिखाया जाता है। अच्छा बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

रात्रिक्लास 25-8-68 :- तुम बच्चों को ड्रामा का मालूम हो गया है तो कहेंगे यह पास्ट हो गया। तुम इस बेहद के ड्रामा को समझ गये हो। जो कुछ हो रहा है कल्प पहले मिसल। बाढ़ आया यह भी ड्रामा प्लैन अनुसार। नई बात कोई नहीं। कल्प2 होता रहेगा। जो कुछ होता रहता है बच्चों को तो जानकारी हो गई है। कितनी विशाल बुधि हो गई है। बेहद के ड्रामा में जो कुछ हो रहा है नथींग न्यू। काम कर के पूरा किया कहेंगे जो किया ड्रामा प्लैन अनुसार। उसमें अच्छा किया वा बुरा किया वह तंग कर रहे है। तुम बच्चों को ही बात है। तुम बच्चों को तो बाप से बेहद की बुधि मिल रही है। दूसरे तो हद में बैठे हैं। तुमको झट ख्याल में आवेंगे नई बात नहीं। कल्प2 अनेक बार ऐसा हुआ था। सभी अवस्था के ऊपर है। अच्छी अवस्था वाले समझेंगे कल्प पहले भी हुआ था। ऐसे ही उड़ा देंगे। शुरू से लेकर हम जानते हैं। कैसे सेकण्ड मिनट दिन पास होते जाते हैं। बेहद के तुम नालेजफुल बन रहे हो। किसने बनाया? बेहद के बाप ने। चित्र आदि जो भक्ति मार्ग में बने हुये हैं सभी फालतू। तुम जानते हो वह है नूरवतन। सूक्ष्मवतन में कुछ भी है नहीं। विष्णु आदि को सूक्ष्मवतन में जेवर आदि कहां से आ सके। वह है सिर्फ साकार। हिस्ट्री जागराफी यहां है। तुम जानते हो कैसे हम सूर्यवंशी चन्द्रवंशी बनते हैं। अभी हम ब्राह्मण हैं। तुम बच्चों की बुधि में चक्र फिरता रहता है नम्बरवार। बुधि अनुसार भिन्न2 रीति औरों को समझा सकते हैं। तुम जानते हो हम बेहद के बाप के स्टुडन्ट हैं। वह हमारा सुप्रीम गुरु भी है। सभी को ले जावेंगे। फिर क्या होगा। जो होने का है वह प्रैक्टीकल में देखेंगे। बेहद का विनाश होगा। सृष्टि तो बहुत बड़ी है ना। एक धर्म स्थापन हो बाकी सभी खलास हो जानी है। यह तुम बच्चों की ही बुधि में है। वह खुशी में भी रहते हैं। हम भाई2 को विश्व का मालिक कैसे बनावें। सारा दिन बुधि में यही रहता है कैसे समझावें। अनेक भ्रान्तियों में पड़े हैं। कुछ भी समझते नहीं। भक्ति मार्ग में जैसे चलते आये हैं चलते आते हैं। तुमको बाप से जो शिक्षा मिलती है उस पर ही चलते हो। समझते हो आधा कल्प हम क्या2 करते आये। कितने वेद-शास्त्र आदि पढ़े। बाप तो कहते हैं एक बात। बाप को जानने से विश्व के मालिकपने का वरसा मिल जाता है। तुम बच्चों की बुधि में है ना। तो यह समझाने में कितनी मेहनत लगती है। प्रजापिता ब्रह्मा के सभी बच्चे एडाप्टेड हो जाते हैं। एडाप्टेशन अभी होती है जब कि बाप है। पार्ट बज रहा है। एडाप्टेशन फिर चलती आती है। बाप है ग्रेट2 ग्रैन्ड फादर। शिव बाप को सिर्फ फादर ही कहेंगे। उनको ग्रेट2 ग्रैन्ड फादर कहेंगे। यह राज़ भी वह समझा सकते जिनकी बुधि में है। नम्बवार महारथी, घोड़ेसवार प्यादे भी चाहिए ना। दिलवाला मंदिर में यादगार भी खड़ा है। यह लक्ष्मी नारायण का एक चित्र तुम्हारा एम आबजेक्ट का क्लीयर है।

तुम बच्चों की बुधि में है बेहद की। बाकी सभी की है हद की बुधि। तो उनको समझाने में कितनी मेहनत करनी पड़ती है। कैसी2 बनावटी बातें सुनाते हैं। अभी तुमको सेन्स मिला है तो नानसेन्स बातों को समझ जाते हो। अनेक अनेकानेक ढेर बातें हैं। बाप समझाते हैं आधा कल्प भक्ति मार्ग चलता है। कम बात थोड़े ही है। बाप ने समझाया है यह सभी है मानव मत। सतयुग में होती है देवी मत। इस समय ईश्वरीय मत मिलती है।

फिर होती है देवीमत। फिर रावण-राज्य में होते हैं मानव मत। तुम किसके मत पर हो? ईश्वरीय मत? देवी मत का तुमको पता नहीं है। समझते हैं वहां दुःख की बात ही नहीं होगी। ड्रामा में डुपलीकेट चीज़ हो न सके। सेकण्ड व सेकण्ड ~~ह~~ जो सुनते हैं सो फिर कल्प बाद सुनेंगे। बाप जो समझाते हैं अनेक बार समझाये है। तुम्हारी है ईश्वरीय मत। आगे मानव मत थी। उसमें कितना फर्क था। जानते हो बाप ने कहा है कामेषु क्रोधेषु। कुछ भी राईट अक्षर तो है ना। भगवानुवाच काम महाशत्रु है। सिर्फ फर्क यह है कृष्णभगवानुवाच कह देते हैं। तुम अभी समझते हो श्रीकृष्ण भगवान नहीं है। ~~ह~~ अभी इस पर जीत पानी है। भगवानुवाच मन्मनाभव। कृष्ण ने नहीं कहा। कृष्ण की आत्मा बहुत जन्मों के अन्त में है। ब्रह्मा और विष्णु का कनेक्शन कितना अच्छा है। और कोई की ताकत नहीं जो समझा सके। तुम एक्युरेट समझाते हो। बाप द्वारा तुमको मालूम हुआ है। ~~अ~~ इन ब्रह्मा विष्णु का क्या सम्बन्ध है। इसको कहा जाता है विचित्र ज्ञान। उनको अपना शरीर है नहीं। जो कुछ है वह सभी खत्म हो जानी है। नालेज ही खत्म हो जावेगी। सदगति मिल जावेगी। पद मिल गया। परम्परा थोड़ेई चलती है। भक्ति ~~अलग~~ अलग ज्ञान अलग है। बच्चे भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार समझते हैं। रोज़ बच्चे सुनते हैं। यहां सम्मुख बाप समझाते हैं। जो कुछ टाईम पास हुआ नथींग न्यू। बाबा कहते हैं रात को देखो वैसा काम तो नहीं किया जिससे रजिस्टर खराब हो। भल न हो पुरुषार्थ करते ~~रहे~~ रहते हैं। अवसेन्ट न हो। मुरली भी पढ़नी चाहिए। कहते हैं बाबा के पास सम्मुख जावें। कशिश होती है ना। यह है सुप्रीम बाप। तो कशिश करते हैं। वहां तो मनुष्य हैं। इनकी पार्ट की ड्रामा में नूंध है। तुमको भक्ति मार्ग के गुरुओं की कशिश बिल्कुल नहीं होगी। सत का संग तारे आधा कल्प। फिर तुमको गिराया किसने? गुरुओं का संग बोरे। सत का संग तारे। ड्रामा बड़ा कायदे पर चलता है। अभी ही तुम्हारा नाम हो जाये तो पता नहीं क्या हो जाये। भगवान आया हुआ है स्वर्ग का वरसा देने। तो अस्तानी हो जाये एकदम। यह होने का न है। बाप दादा दोनों पता नहीं क्या हो जाये। ड्रामा में ऐसी बात है नहीं। यह है स्थाना कशिश। आगे चल क्या होने का है सो देखेंगे। मालूम पड़ेगा बाप से नई विश्व की बादशाही मिलती है। खुशी होती है। पवित्रता बिगर बादशाही मिल न सके। कोई पूछे तो झूठ चल न सके। बहुत पॉयन्टस हैं जिनमें समझ से चलना पड़ता है। बहुत ही बी॰ हो चलना है। वातावरण बिल्कुल कम। ईशारा। बुधि से जानते हैं हम बाबा को याद करते हैं। बाबा से स्वर्ग का वरसा मिलना है। बाहर में कुछ भी करना न है। इसको कहा ही जाता है सहज। लौकिक बच्चे को सहज वरसा मिला है ना। यह है उन से भी सहज। बाप कहते हैं सिर्फ अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो तो एकदम पावन बन जावेंगे। कोई दिक्कत की बात नहीं। कन्याओं को भी बाप कहते हैं अभी फिर फंसना नहीं। अच्छी2 बच्चियों को भी माया फंसाये देती है। दूसरे को दुबण से निकालते निकालते खुद ही फंस पड़ती है। वन्डर फुल नालेज है ना। यह है स्थानी नालेज जो एक ही बार बाप आकर देते हैं। यह भी तुम जानते हो हम कांटे थे। अभी फिर फूल बनना है। बाप की याद से ही फूल बनना है। विकर्म विनाश होना है। आत्मा ही सभी कुछ धारण करती है। भक्ति भी आत्मा करती है। ज्ञान भी आत्मा लेती है। आत्मा ही पार्ट ~~बजा~~ बजाती है। अपने को आत्मा समझ बाप से योग लगाना है। बाबा बाबा करते करते बाबा के पास चले जाते हैं। इसमें ही माया की लड़ाई चलती है। भूला देती है। खबरदारी बहुत रखनी पड़ती है। अच्छा ~~श्री~~

मीठे2 सिकीलधे स्थानी बच्चों को स्थानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। स्थानी बच्चों को स्थानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।

23-8-68 NC

-:* शिव बाबा याद है *:-